

- EXTRAORDINARY : (1) असाधारण (f. जी) ; (2) असामान्य (f. न्या) ; (3) अलोकसामान्य (f. न्या), Ku.
- EXTRAVAGANCE : I. In expenditure : अतिव्ययः or महान् व्ययः, *began to enjoy with e.* : महता व्ययेनोप-
भोक्तुमारब्धवान्, Mu. II. Of expression : अतिशयोक्तिः, Kav. III. Excess : q.v. IV. Wandering beyond proper limits : व्यभिचारः (lit. and fig.).
- EXTRAVAGANT : I. Prodigal : q.v. : अतिव्ययिन् (f. नी). II : Unrestrained : Ph. : *e. conduct* : व्यभिचारः, *e. language* : अतिशयोक्तिः. III. Erring : व्यभिचारिन् (f. जी).
- EXTRAVAGANTLY : I. Prodigally : (1) अतिव्ययेन ; (2) महता व्ययेन. II. Wildly, excessively : q.v.
- EXTRAVAGANZA : उद्गन्तगीतम्.
- EXTRAVASATED : नाडिनिर्गतः (ता, तं), and sim. comp.s.
- EXTRAVASATION : Ph. : *e. of blood* : रक्तनिर्गमः : v. Effusion.
- EXTREME (adj.) : I. Greatest : (1) परः (रा, रं), *possessed of e. faith* : श्रद्धया परयोपेतः, G. ; (2) परमः (मा, मं), *e. gain* : परमो लाभः, Ki. ; (3) निरतिशयः (या, यं), *e. joy* : निरतिशयानन्दः, D.s. ; (4) एकान्तः (न्ता, न्तं), *e. coldness* : एकान्तशैत्यम्, Ku. II. Outermost : परः (रा, रं), *e. limit* परा काष्ठा, Ku. III. Last : q.v.
- EXTREME (subs.) : परा कोटिः : v. Acme, end. Ph. : *gone to the e.* : अतिभूमिं गतः, K.
- EXTREMELY : (1) परम्, *was e. pleased* : परमहृष्यत्, D. ; (2) परमम् ; (3) निरतिशयम् ; (4) एकान्तम् or एकान्ततः.
- EXTREMITY : I. Highest degree : परा कोटिः : v. Acme. II. End : q.v. : अन्तः, *e. of nail* : नखान्तः, At. III. Utmost limit : अवधिः, *e. of the delightful* : आह्लादनीयानामवधिः, K. IV. Greatest need : अतिकृच्छ्रम् or महत् कृच्छ्रम्.
- EXTRICABLE : (1) उद्धरणीयः (या, यं), सम्- ; (2) मोच्य (f. च्या), वि-, परि-.
- EXTRICATE : (1) उद्धरति, सम्-, *to e. one's self* : आत्मानमुद्धरति, V.c. ; (2) मोचयति (मुच्, c. 10.) (=to free : q.v.) ; तारयति (c. of तृ) (=to save : q.v.).
- EXTRICATION : I. Lit. : (1) उद्धारः, सम्- ; (2) उद्धरणम्, सम्- ; (3) मोक्षः, -णम् : v. Deliverance.
- II. Emission : q.v.
- EXTRINSIC, -AL : बाह्यः (ह्या, ह्य') : v. External.
- EXTRUDE : निःसारयति (c. of सृ) : v. To expel, thrust out.
- EXUBERANCE : प्राचुर्यम् : v. Abundance, excess. Ph. : *in e. of joy* : हर्षनिर्भरः (रा, रं), K.
- EXUBERANT : प्रचुरः (रा, रं) : v. Abundant, excessive.
- EXUBERANTLY : प्रचुरम् : v. Abundantly, excessively.
- EXUDATION : I. The act : (1) उद्गारः ; (2) निष्ठीवनम्. II. Flow : q.v. III. What is exuded : (1) निर्यासः ; (2) निर्यहः ; (3) रसः.
- EXUDE (v.) : I. Trans. : (1) उद्गिरति (गृ, c. 6.) ; (2) निरस्यति (अस्, c. 4.) ; (3) निष्ठीवति (ष्ठीव्, c. 1.), *some e.d lac.* : केनचिह्लाक्षारसो निष्ठीवतः, Sa. II. Intrans. : स्रवति (स्र्, c. 1.) : v. To flow.
- EXULT (v.) : (1) उत्सिञ्चति, -ते (सिञ्च्, c. 6.) (often in bad sense), *his mind did not e.* : न तस्योत्सिञ्चिचे मनः, R. ; (2) प्रमोदते (मुद्, c. 1.), *we eagerly e.* : वयं व्यग्राः प्रमोदामहे, Vi.
- EXULTANT : (1) उत्सिक्तः (क्ता, क्तं), *of the e. ascetic* : उत्सिक्तस्य तपोनिधेः, Vi. (2) प्रमुदितः (ता, तं), *the e. party of the bridegroom* : प्रमुदितवरपक्षः, R.
- EXULTATION : (1) उत्सेकः ; (2) प्रमोदः : v. Rapture.
- EXULTINGLY : (1) सोत्सेकम् ; (2) सोह्लासम् ; (3) प्रमोदनिर्भरम्.
- EXUSTION : (1) निर्दाहः ; (2) निर्दहनम् : v. To burn up.
- EYE (subs.) : (1) चक्षुः, *have divine e.s in seeing others' fault* : परदोषेक्षणदिव्यचक्षुषः, Si. ; *where a king places his e.* : यस्मिन् पार्थिवश्चक्षुरारोपयति, P. ; (2) लोचनम्, वि-, *shut the e.s never to open again (i.e. died)* : अपुनरुन्मीलनाय निमिमील लोचने, C. ; *pass with e.s shut* : लोचने मीलयित्वा गमय, Me. ; (3) नेत्रम्, *the observed of hundreds of e.s* : नेत्रशतैकलक्ष्यः (ह्या, ह्यं), R. ; (4) नयनम्, *his e. fell on her e.s* : अस्य तस्या नयनयुगले निपपात चक्षुः, K. ; (5) अक्षि (n.), *the thousand -e.d. (Indra)* : सहस्राक्षः ; *the external coat of the e.* : अक्षणयोर्बाह्यं पटलम्,